लोकप्रियसाहित्यग्रन्थमाला-92

॥ ॐ ॥

कालिदास-प्रणीतम्

अभिज्ञानशकुन्तला नाटकम्

(शारदा-पाण्डुलिपियों में संचरित हुई काश्मीरी वाचना का समीक्षित पाठसम्पादन)

प्रधान सम्पादक :

प्रो. परमेश्वरनारायणशास्त्री

(कुलपति)

सम्पादक :

वसन्तकुमार म.भट्ट

निदेशक, भाषा साहित्य भवन, गुजरात युनिवर्सिटी, अहमदाबाद

लोकप्रियसाहित्यग्रन्थमाला-92

अभिज्ञानशकुन्तला नाटकम्

(शारदा-पाण्डुलिपियों में संचरित हुई काश्मीरी वाचना का समीक्षित पाठसम्पादन)

प्रधान संपादक

प्रो. परमेश्वरनारायणशास्त्री

(कुलपति)

संपादक

वसन्तकुमार म. भट्ट

निदेशक, भाषा-साहित्य भवन

(आचार्य एवं अध्यक्ष, संस्कृत विभाग)

गुजरात युनिवर्सिटी अहमदाबाद

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्

मानितविश्वविद्यालयः

(भारतशासनमानवसंसाधनविकासमन्त्रालयाधीनम्)

नवदेहली

अनुक्रम

1. **पूर्वपीठिका :** 15-82

(1) काश्मीरी वाचना का अभिज्ञानशकुन्तला नाटक, शारदा-पाण्डुलिपिओं पर अब तक हुए कार्य का ऐतिहासिक दृष्टि से विवरण, (2) समीक्षणीय सामग्री : शारदा पाण्डुलिपिओं का विवरण, (3) पाण्डुलिपिओं के सांकेतिक नाम, एवं फोटोकोपी (4) पाण्डुलिपिओं का आनुवंशिक सम्बन्ध, (5) प्रस्तुत समीक्षित पाठसम्पादन की पद्धति, (6) काश्मीरी वाचना के पाठ की कतिपय विशेषताएँ, (7) काश्मीरी शारदा पाठ की प्राचीनतमता के समर्थक प्रमाण एवं (8) अभिज्ञानशकुन्तला की पाठयात्रा। (9) अभिज्ञानशाकुन्तल की वाचनाओं का निर्धारण।

2. **उत्तर-पीठिका : प्रत्येक अङ्क के पाठभेदों का विश्लेषण** 83-415

(क) अभिज्ञानशकुन्तला (अङ्क : 1) के पाठभेदों में अन्तर्निहित पाठविचलन का क्रम एवं मौलिकता की गवेषणा पृ. 83-130

(ख) अङ्क-2 के पाठभेदों में उद्-भासित हो रहा पाठविचलन का क्रम, पृ. 131-155

(ग) अङ्क-3 कुसुमशयना शकुन्तलाः तृतीयांक में पाठविचलन का क्रम, पृ. 156-201

(घ) अङ्क-4 शकुन्तला प्रस्थान के साथ साथ शाकुन्तल का पाठप्रस्थान, पृ. 202-232

(च) हंसपदिका-गीत एवं भ्रमर का प्रतीक : पुनः परामर्श

भूमिका : अभिज्ञानशकुन्तला नाटक के पञ्चमाङ्क में हंसपदिका-गीत का प्रसंग आता है। इस गीत को सुनने के बाद विदूषक ने राजा दुष्यन्त को प्रश्न पूछा है: "क्या आपने इस गीत का अक्षरार्थ समझा?" यह प्रश्न सहृदय प्रेक्षकों और पाठकों को भी शताब्दियों से पुछा गया है। लेकिन उसका कोई एक निश्चित अर्थ होना सम्भव नहीं लगता है। सभी ने अपनी अपनी भावयित्री प्रतिभा के अनुसार उसका उत्तर सोचा है। टीकाकारों की लम्बी परम्परा ने भी इस विषय में खूब सोचा है और हमारी मदद की है। दुष्यन्त के जीवन का एक पहलु, जो अखण्ड पुण्यों के फल स्वरूप आकारित होता है, वह है कण्वाश्रम के प्राङ्गण में तापस-कन्या शकुन्तला से हुआ प्रेम-प्रसंग। नाटक के पहले तीन अङ्कों में कवि कालिदास ने इस अकृत्रिम प्रेम-प्रसंग का निरूपण प्रत्यक्ष रूप से किया है। लेकिन पञ्चमाङ्क के आरम्भ में, हस्तिनापुर के राजमहलों में चल रहे उसके वैवाहिक जीवन का दूसरा पहलु परोक्ष रूप से प्रस्तुत होता है। इस दूसरे पहलु का केन्द्रीभूत स्थान है हंसपदिका-गीत का प्रसंग। अतः हंसपदिका-गीत से जुड़े मत-मतान्तरों की समीक्षा करना बहुत आवश्यक है।तथा इस हंसपदिका-गीत से सम्बद्ध मधुकर का प्रतीक भी प्रस्तुत नाट्य-कृति में निरूपित हुए प्रेम-प्रसंग को समझने की चावी स्वरूप है या नहीं? इसकी भी आलोचना करनी अनिवार्य है। क्योंकि नायक के लिए प्रयुक्त भ्रमर के प्रतीक के उपरान्त नायिका शकुन्तला के लिए भी प्रयुक्त हुए (हरिणी जैसे) दूसरे प्रतीकों को इस चर्चा में शामिल करना चाहिए। अन्यथा हम

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
मानितविश्वविद्यालयः
(भारतशासनमानवसंसाधनविकासमन्त्रालयाधीनम्)
नवदेहली